प्रातःक्लास 12/7/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्तिः अभी रूहानी बच्चे क्या कर रहे थे? अव्यभिचारी याद में बैठे थे। एक होती है व्यभिचारी याद, दूसरी होती है अव्यभिचारी याद। अव्यभिचारी याद और व्यभिचारी भक्ति। भक्ति जब पहले2 शुरू होती है तो सभी शिव की पूजा करते हैं। ऊँच ते ऊँच भगवान वही है। जो बाप भी है, शिक्षक भी है। पढ़ाते हैं। क्या पढ़ाते हैं? मनुष्य से देवता बनाते हैं। देवता से मनुष्य बनने में तुम बच्चों को 84 जन्म लग गये और मनुष्य से देवता बनने में एक सेकेण्ड लगता है। यह तो बच्चे जानते हैं हम बाप की याद में बैठे हैं। वही हमारा टीचर भी है। सद्गुरु भी है। योग सिखलाते हैं कि एक की याद में रहो। ऊँच ते ऊँच भगवान। वह खुद कहते हैं हे आत्माएँ, हे बच्चों देह के सभी सम्बन्ध छोड़ो। अभी वापस जाना है। यह पुरानी दुनिया बदल रही है। अभी यहाँ रहना न है। पुरानी दुनिया के विनाश के लिए ही यह बारूद आदि बनाया हुआ है। नेचुरल कैलेमिटिज़ भी मदद करती है। विनाश तो होना है जरूर। अभी तुम बच्चे न हो कलियुग में, न सतयुग में। तुम पुरुषोत्तम संगमयुग पर हो। यह आत्मा जानती है हम अभी लोट रहे हैं। इसलिए बाप कहते हैं इस पुरानी देह को भी छोड़ना है। देह सहित जो भी इस दुनिया में देचाने(देखने) में आता है यह सभी विनाश हो जाने हैं। शरीर भी खत्म होना है। अभी हम आत्माओं को घर लौटना है। लौटने बिगर नई दुनिया में आ नहीं सकते हैं। अभी तुम पुरुषोत्तम संगमयुग पर बैठे हो। पुरुषोत्तम बनने पुरुषार्थ कर रहे हो। यह देवी–देवताएँ हैं सब से ऊँच। पहले ऊँच ते ऊँच है निराकार बाप। फिर मनुष्य सृष्टि में आओ तो इसमें ऊँच हैं देवताएँ। वह भी हैं मनुष्य; परन्तु दैवी गुण वाले। फिर वही बनते हैं आसुरी गुण वाले। अभी फिर आसुरी गुणों से दैवी गुणों में जाना पड़े। किसको? तुम बच्चों को। तुम बच्चे पढ़ रहे हो। औरों को भी पढ़ाते हो। समझाते हो। सिर्फ बाप ही मैसेज देना है। बेहद का बाप बेहद का वरसा देने आया है। अभी हद का वरसा पूरा होता है। हद के वरसे का मुदा आधा कल्प पूरा हुआ अर्थात् भक्ति पूरी हुई। रावण राज्य पूरा होने का है। यह बच्चे ही जानते हैं कि हम रावण राज्य में बैठे हैं। बाप ने समझाया है 5 विकार रूपी रावण की जेल में सभी मनुष्य है और सभी दुख ही उठाते हैं। सूखी–रूखी रोटी मिलती है। गन्द भी बहुत खाते हैं। नम्बरवन तो भार खाते हैं। नानक ने भी कहा है ना असंख्य चोर हराम खोर..... वह आये हैं अभी कलियुग के समय में। तो वह भी शिक्षा देते हैं। दुनिया में क्या है। सभी हराम खोर हैं। आसुरी मनुष्य हैं। उन्हों को देवी–देवता बनाने लिए बाप को आना पड़ता है। बाप के सिवाय मनुष्य को देवता कोई बना न सके। तुम यहाँ बैठे ही हो मनुष्य से देवता बनने। देवताएँ होते ही हैं सतयुग में। अभी यह है कलियुग। बहुत धर्म हो गये हैं। तुम बच्चों को रचयिता और रचना का परिचय खुद बाप बैठ देते हैं। तुम सिर्फ ईश्वर, भगवान, परमात्मा कहते थे। तुमको यह पता नहीं था कि वह बाप भी है, टीचर भी है, गुरु भी है। उनको कहा जाता है सद्गुरु। सद्गुरु अकाल मूर्त कहा जाता है ना। तुमको आत्मा और जीवात्मा कहा जाता। वह अकालमूर्त इस शरीर रूपी तख्त पर बैठा हुआ है। वह जन्म नहीं लेते जैसे तुम लेते हो। तो वह अकालमूर्त बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। मेरा अपना रथ नहीं है। मैं तुम बच्चों को पावन कैसे बनाऊँ? मुझे रथ तो चाहिए ना। अकाल मूर्त को भी यह तख्त चाहिए। अकाल तख्त मनुष्य का होता है और कोई नहीं होता। तुम हरेक बच्चे तख्त हो। अकालमूर्त आत्मा यहाँ विराजमान है। वह है इन सभी का बाप। तुमको कहा जाता है अकालमूर्त। वह पुनर्जन्म में नहीं आते हैं। तुम आत्माएँ पुनर्जन्म में आती हो। वह कहते हैं मैं आता ही हूँ कल्प के संगमयुग पर। अर्थात् जब भक्तिमार्ग की रात पूरी होती है। भक्ति को रात, ज्ञान को दिन कहा जाता है। यह पक्का याद करो। मुख्य है ही दो बात। अलफ बाप, बे बादशाही। बाप आकर बादशाही देते हैं और बादशाही के लिए पढ़ाते हैं। इसलिए उनको पाठशाला भी कहा जाता है। भगवानुवाचः। अगर कृष्ण बुद्धि में आये, वह तो भगवान है नहीं। वह तो साकार मनुष्य है। भगवान तो है एक ही निराकार। उनका भी पार्ट होना चाहिए ना। ब्रह्मा–विष्णु, शंकर को भी शरीर दे दिया है। अकालमूर्त शिव

को शरीर नहीं है; परन्तु उनका भी पार्ट तो होगा ना। त्रिमूर्ति बनाते हैं उनमें मुख्य शिवबाबा को डालते नहीं हैं। कहते भी हैं ब्रह्मा देवता–विष्णु देवता..... बाकी शिव कहाँ गया? वह है ऊँच ते ऊँच भगवान। उनको सभी याद करते हैं। ऐसा कोई मनुष्य नहीं होगा जो भक्तिमार्ग में उनको याद न करता हो। दुख में ही सभी पुकारते हैं हे भगवान, हे लिबरेटर। ओ गाड फादर; क्योंकि वह है बेहद की आत्माओं का फादर। जरूर बेहद का ही सुख देगा। हद का बाप हद का सुख देंगे। हद के सुख में है तो आत्मा बेहद के सुख देने वाले बाप को याद करती है। वह क्या सुख देते हैं यह कोई को पता नहीं है। बाकी याद जरूर करते हैं। बाप आते हैं कहते हैं बच्चों और संग तोड़ एक बाप को याद करो। आत्मा ही सुख को याद करती है। यह भी बाप ने बताया है तुम देवी–देवता बन नई दुनिया में रहते हो वहाँ तो अपार सुख है। उन सुखों का अन्त नहीं पाया जाता। अभी थोड़े ही तुमको पता पड़ता है कैसे सुख होंगे। समझते हो नई दुनिया में जरूर सुख ही होंगे। नये मकान में सुख होता है ना। पुराने मकान में दुख होता है। तब तो बाप बच्चों के लिए नया मकान बनाते हैं। नया बनकर तैयार होता है फिर बच्चों का बुद्धियोग नये मकान में लग जाता है। यह तो हुई हद की बातें। अभी बेहद का बाप नई दुनिया बना रहे हैं। पुरानी दुनिया का विनाश होना है। जो भी कुछ देखते हो वह सभी कब्रदाखिल होना है। अभी परिस्तान स्थापन हो रही है। अभी तुम संगम पर खड़े हो। कलियुग तरफ भी देख सकते हो, सतयुग तरफ भी देख सकते हो। कलियुग तरफ है अनेक धर्म। बहुत गन्द लगा पड़ा है। खान–पान आदि सभी हैं भ्रष्टाचारी। फिर नई दुनिया है श्रेष्ठाचारी। उनको कहा ही जाता है स्वर्ग बहिस्त। तुम संगम पर साक्षी हो देखते हो। तुम देवता बनने लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। सतयुग में सभी निर्विकारी होंगे। वहाँ है ही एक धर्म। प्रदर्शनी अथवा म्युजियम में आते हैं तो वहाँ भी तुम संगम पर खड़ा कर दो। इस तरफ है कलियुग उस तरफ है सतयुग। हम बीच में हैं। जानते हो बाप बैठ नई दुनिया स्थापन करते हैं। वहाँ तो बहुत थोड़े मनुष्य होते हैं। तो इतने सभी वापस जाने हैं। और कोई भी धर्म वाला नहीं आता। सिर्फ तुम ही पहले2 आते हो। अभी तुम सतयुग में जाने लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। पतित तो कोई भी जा नहीं सकते। पावन बनने लिए ही मुझे पुकारा है। हे बाबा हमको पावन बनाकर पावन दुनिया में ले चलो। ऐसे नहीं कहते हमको शान्तिधाम ले चलो। पतित दुनिया और पावन दुनिया उनको ही कहा जाता है। हम आत्माएँ न नई दुनिया न पुरानी दुनिया के रहने वाले हैं। हम तो परमधाम के रहने वाले हैं। उसको स्वीटहोम कहा जाता। अभी हमको घर जाना है जिसको मुक्तिधाम कहा जाता है। जिसके ही सन्यासी शिक्षा देते हैं। वह सुखधाम का ज्ञान दे न सके। रहते हैं मुक्तिधाम। तो जीवन मुक्ति का ज्ञान दे न सके। वह है निवृत्ति मार्ग। तुम बच्चों को समझाया गया है कौन2 धर्म वाले कब2 आते हैं। मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ में पहले2 फाउंडेशन तुम्हारा है। बीज को कहा जाता है वृक्षपति। बीज का एक दाना बोया जाता है फिर उनसे कितना वृद्धि होती है। बाप कहते हैं मैं वृक्षपति ऊपर में निवास करता हूँ। जब झाड़ एकदम जड़–जड़ीभूत हो जाता है तब मैं आता हूँ। आदि सनातन देवी–देवता धर्म अभी नहीं है। जैसे मिसाल दिया जाता है बनीयन ट्री का। बड़ा ही वन्डरफुल झाड़ है। बिगर फाउंडेशन बाकी सारा झाड़ खड़ा है। और कोई झाड़ बिगर फाउंडेशन ऐसे हो नहीं सकता। इस बेहद के झाड़ में भी आदि सनातन देवी–देवता धर्म है नहीं। बाकी सभी खड़े हैं। पहले2 एक धर्म था। दूसरा कोई था नहीं। सूर्यवंशी फिर चन्द्रवंशी था। चन्द्रवंशी को भी सेकण्ड ग्रेड कहेंगे ; क्योंकि पुराना हो गया ना। यह नॉलेज सारी बाप ही देते हैं। अभी तुम बच्चों को मूलवतन सूक्ष्मवतन भी याद है। हम मूलवतन के निवासी हैं। यहाँ हम पार्ट बजाने आते हैं। तुम बच्चे आलराउन्ड पार्ट बजाने वाले हो। इसलिए 84 जन्म है मैक्सीमम। फिर मिनिमम एक जन्म। मनुष्य लोग फिर कह देते 84 लाख जन्म। वह भी कैसे होंगे, यह भी समझ नहीं सकते हैं। बाप आकर समझाते हैं 84 जन्म तो तुम लेते हो। पहले2 मेरे से तुम

बिछुड़ते हो। सतयुगी देवताएँ ही पहले होते हैं। जब सतयुगी देवताओं की आत्माएँ यहाँ पार्ट बजाती हैं तो बाकी सभी आत्माएँ कहाँ चले जाते यह भी तुम बच्चे जानते हो। बाकी इतने सभी आत्माएँ शान्तिधाम में रहता हैं। तो शान्तिधाम अलग हुआ ना। बाकी दुनिया तो यही है। पार्ट यहाँ बजाते हैं। बाकी वहाँ तो आत्माएँ शान्तिधाम में रहती हैं। शान्ति तो आत्मा का स्वधर्म है। फिर यहाँ आते हैं पार्ट बजाने। नई दुनिया में सुख का पार्ट, पुरानी दुनिया में दुख का पार्ट बजाना होता है। सुख और दुख का यह खेल है। वह है ईश्वरीय राम राज्य। दुनिया में कोई भी मनुष्य यह नहीं जानते कि यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। न रचयिता को न रचना के आदि–मध्य–अन्त को जानते हैं। इसलिए सभी को कहा जाता है नास्तिक। भल कोई भी सन्यासी उदासी पास जाओ बोलो, रचयिता और रचना का परिचय दो तो कह देंगे सर्वव्यापी है। बड़ी ग्लानी की है। परम–आत्मा 24 अवतार लेते कच्छ–मच्छ अवतार, बराह अवतार। क्या2 बातें सुनाते हैं। 84 लाख योनियाँ हैं उनमें मनुष्य का एक जन्म.... बाप कहते हैं यह सभी रांग है। तुम्हारी शास्त्र कोई ज्ञान का शास्त्र नहीं। वह सभी हैं भक्ति के शास्त्र। ज्ञान का शास्त्र एक भी नहीं। अगर कहे गीता, परन्तु उसमें तो ज्ञान है नहीं। वह भी भक्ति का शास्त्र है। अगर उसमें ज्ञान होता तो तुम वह पढ़ते2 सद्गति को पाते। ज्ञान का सागर तो एक ही बाप को कहा जाता है। और कोई को सद्गति का ज्ञान है नहीं। रचयिता और रचना के आदि–मध्य–अन्त का ज्ञान शास्त्र आदि में नहीं है। मैं तुमको सुनाता हूँ। फिर यह प्रायःलोप हो जाता है। सतयुग में यह रहता नहीं। वह किसके पास आवे कहाँ से। भारत का प्राचीन यह राजयोग है उनका पुस्तक कोई नहीं है। एमआबजेक्ट कुछ नहीं। नाम रख देते हैं गीता पाठशाला। वेद पाठशाला। एम आबजेक्ट कुछ भी नहीं। यह वेद–शास्त्र आदि सभी हैं रचना। गीता की रचना। रचना से वरसा नहीं मिल सकता। वरसा मिलता है रचयिता बाप से। हर एक मनुष्य क्रियेटर है। बच्चों को रचते हैं। वह है हद के ब्रह्मा। यह है बेहद का ब्रह्मा। वह भी पिता यह भी पिता। वह है निराकार आत्माओं का पिता। वह लौकिक पिता। यह फिर है प्रजापिता। प्रजापिता कब होना चाहिए। क्या सतयुग में? नहीं। पुरुषोत्तम संगमयुग पर होना चाहिए। मनुष्यों को पता नहीं है संगमयुग कब होता है। उन्होंने तो सतयुग–कलियुग आदि को लाखों वर्ष दे दिये हैं। बाकी समझाते हैं 1250 वर्ष का युग होता है। स्वस्तिका होता है ना। सभी युगों की आयु बराबर होती है। 84 जन्मों का भी हिसाब चाहिए ना। हम कैसे उतरते हैं। सीढ़ी का भी हिसाब चाहिए ना। पहले2 फाउंडेशन में है देवी–देवताएँ। उनके बाद फिर आते हैं इस्लामी, बौद्धी आदि। बाप ने झाड़ का राज़ भी बताया है। बाप के सिवाय तो कोई भी सिखला न सके। तुमको कहेंगे यह चित्र आदि कैसे बनाये, किसने सिखाया? बोलो, ध्यान में बाप दिखलाते हैं फिर हम आकर बनाते हैं। फिर उसको बाप आ करके करेक्ट भी करते हैं। इस रथ में आकर करैक्ट भी करते हैं कि यह ऐसे बनाओ। खुद ही करेक्ट करते हैं। कृष्ण को श्याम–सुन्दर कहते हैं ; परन्तु मनुष्य तो समझते नहीं कि क्यों कहा जाता है। यह वैकुण्ठ का मालिक था तो गोरा था। फिर गांव छोड़ा सांवरा बना। इसलिए उनको ही श्याम–सुन्दर कहते हैं। यह ही पहले आते हैं तत् त्वम्। इन ल0ना0 की राजाई चलती है ना। आदि सनातन देवी देवता धर्म स्थापन कौन करते है यह भी किसको पता नहीं। धर्मभ्रष्ट, कर्मभ्रष्ट यह ही होते हैं। अपन को आदि सनातन देवी–देवता धर्म हिन्दू कह देते हैं। हिन्दू हिन्दुस्तान के रहवासी। अपने धर्म को भूल जाते तो भारत को भी भुला देते हैं। बाप कहते हैं मैं भारत में ही आता हूँ। भारत में ही देवी–देवताओं का राज्य था। जो फिर प्रायः लोप हो गया है। मैं आता हूँ फिर से स्थापन कर बाकी और सभी धर्मों का विनाश कर देता हूँ। पहले2 है ही आदि सनातन देवी–देवता धर्म। यह झाड़ है ना। झाड़ वृद्धि को पाता रहता है। नये पत्ते मठ–पंथ पिछाड़ी में आते हैं तो उनकी शोभा हो जाती है। फिर अन्त में जब सारा झाड़ जड़–जड़ीभूत अवस्था को पाता है तब मैं आता हूँ। यदा यदा हि..... आत्मा अपन को भी नहीं जानती तो बाप को भी नहीं जानती। अपन को भी गाली तो बाप को भी गाली, तो देवताओं को गाली देते रहते।

तमोप्रधान बेसमझ बन जाते हैं तब मैं आता हूँ। यह खेल है जो बाप बैठ समझाते हैं। बाप अपना परिचय भी देते हैं कि मैं कैसे आता हूँ। यह भी अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। इनके 84 जन्मों के अन्त के भी अन्त में जब इनकी वानप्रस्थ अवस्था होती है तब मैं प्रवेश करता हूँ। पतित दुनिया में ही आना पड़े। मनुष्य भी है पतित। उसमें भी नम्बरवन यह पतित। जिसमें मैं प्रवेश करता हूँ। फिर यही नम्बरवन में जावेंगे। तुम मनुष्यों को जैसे जीयदान देते हो। अर्थात् मनुष्य से देवता बनाते हो। सभी दुखों से दूर कर देते हो। सो भी आधा कल्प के लिए। गायन भी वन्देमात्रम्। कौन सी माताएँ जिनकी वन्दना करते हैं। तुम माताएँ ही हो जो सारी सृष्टि को बहिस्त, स्वर्ग बनाती हो। भल मेल्स भी हैं; परन्त मैजोरिटी माताओं की है। इसलिए माताओं की महिमा करते हैं। बाप आकर तुमको महिमा लायक बनाते हैं। पहले माता। पहले लक्ष्मी फिर नारायण। तुमको आगे बढ़ाते हैं। तुम्हारा मान सन्यासियों ने गंवाया है। कहते हैं नारी नर्क का द्वार है। तब तो खुद भागते हैं। हद का सन्यास भी करते हैं। तुम्हारा है बेहद का सन्यास। पुरानी दुनिया को छोड़ नई दुनिया में जाते हो। तुम दुखधाम से सुखधाम जाने लिए यहाँ आये हो। यह संगमयुग है कल्याणकारी। संगमयुग जबकि मनुष्य पतित से पावन बनते हैं। तुम भी पतित थे। अभी पावन बनते हो। यह है एमऑबजेक्ट। नर से ना0 बनना। सृष्टि का चक्र भी तुम समझ गये हो। बाप के सिवाय कोई समझा न सके। सन्यासी लोग भ्रमरी का मिसाल देते हैं। वह कीड़े को आप समान बनाती है; परन्तु वास्तव में वह भ्रमरी नहीं, तुम ब्राह्मणियाँ हो। वह लोग दृष्टान्त देते हैं भ्रमरी कीड़े का। बाकी जानते कुछ भी नहीं। तुमको बाप समझाते हैं तुम ब्राह्मणियाँ हो। शुद्र हैं विष्टा के कीड़े। उनको तुम ज्ञान की भूं2 सिखलाकर देवता बना देते हो। बाप कैसे मिसाल दे समझाते हैं। कहाँ वह सन्यासी लोग सिर्फ कॉपी कर रिपीट करते हैं। अर्थ कुछ नहीं समझते। यह राज़ सारा तुम ही जानते हो। हमारा स्वीटहोम वह है जहाँ से आये हैं पार्ट बजाने लिए। दैवीधर्म में सुख का पार्ट बजाते हैं फिर दो कला कम होती जाती है। फिर द्वापर में रावण आते हैं। वर्ष2 रावण को मारते हैं गोया रावण राज्य ठीक2 है। कहते भी हैं रामराज्य नहीं है। रामराज्य सतयुग को कहा जाता है। उनको कहा ही जाता है स्वर्ग। त्रेता को कहेंगे सेमी स्वर्ग। वैसे ही द्वापर को सेमी नर्क, कलियुग को बिल्कुल रौरव नर्क कहा जाता है। तो यह बेहद का बाप बैठ बच्चों को पढ़ाते हैं। बाप भी हुआ तो टीचर भी हुआ और फिर साथ भी ले जावेंगे। सभी की सद्गति करते हैं। उनको कहा जाता है सद्गुरु अकालमूर्त। मुख से कहते भी हैं सद्गुरु अकालमूर्त है। फिर उनको काल नहीं खाता। जिनको काल खाता है फिर उनको भी गुरु कह देते। भूल जाते हैं। बाप रचयिता को भी भूल जाते हैं तो रचना को भी भूल जाते हैं। बाप आकर सृष्टि चक्र के आदि–मध्य–अन्त का राज समझाते हैं जिससे तुम चक्रवर्ती राजा बनते हो। तो तुम बच्चे स्वदर्शनचक्रधारी हो गये ना। स्वदर्शनचक्र को याद करने से भी तुम्हारे विकर्म विनाश होते हैं। यहाँ बैठते हो तो भी स्वदर्शनचक्रधारी हो बैठो। स्वदर्शनचक्र को फिराओ। कहाँ भी काम आदि पर बैठते हो तो स्वदर्शनचक्रधारी हो बैठो। अलफ को और सृष्टि चक्र को भी याद करो। चक्र को याद नहीं करेंगे तो सिर्फ मुक्ति को पावेंगे। चक्र को भी याद करेंगे तो जीवनमुक्ति मिलेगी। सिर्फ बाप को नहीं, सृष्टि चक्र को भी याद करना है। स्वदर्शनचक्र फिराते रहेंगे तो तुम्हारे पाप कटते रहेंगे। यह नॉलेज है। बाकी चक्र कोई चीज़ है नहीं। यह सारा बुद्धि का काम है। आत्मा पढ़ रही है। इसमें लिखने–पढ़ने की भी दरकार नहीं। सिर्फ अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है। सृष्टि चक्र का ज्ञान भी अन्दर में रहना है। बाप की भी बुद्धि में है ना। जिसको ही ज्ञान का सागर कहा जाता है। खुद सम्पूर्ण पावन है। तुम भी बाप को याद करने से पावन और फिर सृष्टि चक्र को याद करने से चक्रवर्ती राजा बनते हो। अभी तुम संगमयुग पर बैठे हो। उस तरफ है कलियुग इस तरफ है सतयुग। नर्क और स्वर्ग होता यहाँ ही है। ऊपर में नहीं होता। नई सृष्टि को स्वर्ग, पुरानी सृष्टि को नर्क कहा जाता है। अभी पुरानी दुनिया है ना। तुम न पुराने में हो न नये में बैठे हो। संगम पर हो। अच्छा, रूहानी बच्चों को बापदादा का यादप्यार गुडमार्निंग, रूहानी बच्चों को नमस्ते।